बाइबल टीचर

वर्ष 20 | अक्टूबर 2023 | अंक 11

सम्पादकीय

एक मसीही प्रचारक को कैसा होना चाहिए

अपने इस लेख में हम यह देखना चाहेगे कि एक प्रचारक को कैसा होना चाहिए और उसकी बातचीत कैसी होनी चाहिए? वह अपने शब्दों का चयन किस प्रकार से करता है? लोगों से जब बातचीत होती है तो वह किस प्रकार से बात करता है? कई बार मसीह की कलीसिया के प्रचारकों के ऊपर साम्प्रदायिक कलीसियाओं के प्रचारकों का प्रभाव पड़ता है और वे उन्हीं की जैसी भाषा बोलने लगते हैं। परन्तु अच्छा रहेगा यदि हम अपनी बातचीत में सफाई रखें। अपनी चोकसी रखें। कलीसिया के सामने एक प्रचारक को अच्छा उदाहरण रखना चाहिए।

अब एक बात जो अक्सर देखी जाती है, जब प्रचारक कहते हैं, आओ चर्च चलें। या आपको चर्च आना चाहिए। हम चर्च जा रहे हैं या मैं चर्च लगाने जा रहा हूं। जबकि सही बात यह है कि हम चर्च नहीं बल्कि आराधना करने जाते हैं। हम चर्च भवन में आराधना के लिये जाते हैं। भवन एक ऐसा स्थान हैं जहां कलीसिया यानि लोग आराधना के लिये जाते हैं। इस बात में जो गलती लोग करते हैं, वो यह है कि वे भवन को ही कलीसिया समझते है जबकि वो भवन, चर्च या कलीसिया नहीं हैं (मत्ती. 16:18, 19, इफि. 5:23-27, कुलु. 1:18)।

अब कई प्रचारक एक और भाषा का इस्तेमाल करते हैं कि हमारा चर्च या आपका चर्च। यह सारी बातें या ऐसी भाषा साम्प्रादायिक कलीसिया के लोग इस्तेमाल करते हैं। न यह मेरा चर्च है और न तेरा चर्च है यह चर्च है मसीह का क्योंकि वो इसको बनाने वाला है और वह इसका सिर है। कई लोग किसी व्यक्ति विशेष का नाम लेकर कहते हैं कि हम तो भाई सुशील की कलीसिया में जाते हैं। हम बाइबल में कभी भी यह बात नहीं पढ़ते कि पौलुस की या पतरस की कलीसिया। चर्च का सम्बन्ध यीशु से है क्योंकि वह इसका बनाने वाला है। (मत्ती 16:18)। कलीसिया का मालिक केवल यीशु है। सुशील, नरेश या रमेश नहीं है। यह बड़े आदर की बात है कि बपतिस्मा लेकर हम इसके सदस्य बनते हैं। यीशु ने इसके लिये अपना लोहु बहाया था। (प्रेरितों 20:28;

इफि. 5:23)। मसीह की कलीसिया के प्रचारकों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आप जब लोगों से बात करते हैं तो किस प्रकार से बातचीत करनी चाहिए। आप शायद सोचें कि मैं व्यर्थ की बात कर रहा हूं परन्तु ऐसा नहीं है, यह बातें छोटी तो लगती है लेकिन इनका परिणाम सही नहीं होता। हमारी बोली यह प्रकट कर देती है कि हम कौन है और क्या है?

कई प्रचारक अपना काम बनाने के लिये एक दूसरे से झुट भी बोलते हैं। बाइबल हमें बताती है कि एक दूसरे से झूठ मत बोलो (इफि. 4:25)। दुनिया के लोग शायद कहे कि अपना काम निकालने के लिये अगर झूठ बोल लिया जाए तो कोई बात नहीं, लेकिन मसीही लोग झूठ से बचते हैं। मसीही लोग सब बातों में ईमानदारी से चलते हैं। (रोयिमों 12:17)।

प्रचारको में एक और गलत आदत होती है कि वे एक दूसरे से जलन करते हैं। एक दूसरे की बुराई करते हैं जबकि हमें एक दूसरे की उन्नति का कारण बनना चाहिए न कि अपने साथी प्रचारक को गिराने का। कई प्रचारक ऐसे हैं जो सोचते हैं कि हम बहुत बढ़िया प्रचार करते हैं, दूसरा प्रचारक तो ऐसे ही है, या उसे प्रचार करना नहीं आता। आपस में कम्पीटीशन करने की आवश्यकता नहीं है। एक दूसरे का साहस बढ़ाईये। कभी भी घमण्ड मत करिये, आप परमेश्वर के दास है (याकूब 3:5)। यदि आप में घमण्ड है तो कलीसिया के लोग आपको पहचान लेंगे। यीशु ने सिखाया था कि ''धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे'' (मत्ती 5:5)।

याद रखिये प्रीचर भी कोई फरिश्ते नहीं हैं। उनसे भी गलतियां हो जाती हैं। उनके साथ अच्छा व्यवहार कीजियें। कुछ बुरी आदतों में भी कई प्रचारक फंस जाते हैं। शायद हो सकता है वे छिपकर बीड़ी-सिगरेट पीते हैं, गुटका खाते हैं, या और कोई बुरी आदत पर चलते है तो यह अनुचित है। प्रचारक को हर प्रकार के नशे से दूर रहना चाहिए। शायद कई प्रचारक ऐसा भी सोच सकते हैं कि कभी कभार शराब या बियर पी लो तो कोई गलत बात नहीं है परन्तु बाइबल शिक्षा देती है कि हमें अपने मसीही जीवन को साफ़ सुथरा रखना चाहिए, क्योंकि प्रेरित पौलुस ने कहा था कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर हैं। (1 कुरि. 6:19)। प्रत्येक प्रचारक को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए। कलीसिया में जब आप लोगों से मिलते हैं विशेषकर स्त्रियों से, तो आदर से मिलिये तथा कोई भी सीमा न लांघे तथा जब आप घरों में बाइबल स्टडी के लिये जाते हैं और जहां घर में केवल स्त्री है तो वहां अपनी पत्नी के साथ जायें। ऐसा प्रयत्न करें कि वहां अकेले न जायें। ऐसी कुछ सावधानियां आपको बरतने की आवश्यकता है।

एक प्रचारक को प्रचार के काम में परिश्रमी होना चाहिए। अपने समय का सदुपयोग करना चाहिए। यीशु का प्रचार करने की जिम्मेदारी ली है तो उसे पूरा करें। प्रत्येक सदस्य के साथ आपका अच्छा व्यवहार हो। अपने मन से यह बात निकाल दें कि आप पास्टर-गिरी कर रहे हैं। बाइबल के अनुसार पास्टर उन्हें कहते जो बुजुर्ग हैं तथा कलीसिया द्वारा सदस्यों की आत्मिक अगुवाई के लिये चुनें गए हैं (1 तीमु: 3)। अपनी सेवा को ईमानदारी से पूरा करें। यदि आप एक जवान प्रचारक हैं तो पौलुस की यह बात याद रखें कि ''कोई तेरी जवानी को तुच्छ न जाने'' (1 तीमु. 4:12)।

अदन में खोया मसीह में पाया

सनी डेविड

क्या कभी आपने इस बात पर विचार किया है, कि यदि मनुष्य कभी पाप नहीं करता तो वह हमेशा परमेश्वर की संगति में उसके साथ रहता? यह विचार कितना अच्छा है। क्योंकि आरम्भ में जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया था तो वह मनुष्य के साथ उसकी संगति में था। उस समय मनुष्य के पास कोई समस्या नहीं थी। क्योंकि उस वक्त वह एक ऐसे संसार में नहीं रहता था जिसमें मृत्यु, शोक और समस्याएं हैं। मनुष्य उस समय एक ऐसे संसार में रहता था जहां उसकी आवश्यकताओं की सब वस्तुएं उसे प्राप्त थीं। और सबसे बड़ी बात यह थी की उस समय परमेश्वर स्वयं मनुष्य के साथ रहता था। परन्तु मनुष्य ने पाप करके, अर्थात् परमेश्वर की आज्ञा को तोड़कर अपने आप को परमेश्वर से अलग कर लिया। और इसका परिणाम यह हुआ कि न केवल मनुष्य उस आत्मिक जीवन को ही खो बैठा जो उसे परमेश्वर के साथ प्राप्त था, लेकिन परमेश्वर से अलग होकर उसने एक ऐसे संसार में भी प्रवेश किया जिसमें समस्याएं, दुख और कष्ट और शोक और मृत्यु विद्यमान है। परमेश्वर ने जब मनुष्य को बनाया था तो उसने मनुष्य को अदन नाम के एक ऐसे सुन्दर स्थान पर रखा था जहां उसे किसी चीज की घटी नहीं थी और न किसी प्रकार का कोई दुख था। वहां न तो कोई कष्ट था न ही कोई समस्या थी, न मृत्यु थी और न शोक था और न विलाप था। परन्तु जब से मनुष्य ने अदन को छोड़ा है उसके दुखों का कोई अन्त नहीं है। इस पृथ्वी पर आज जहां कहीं भी मनुष्य है वह भय और दुख में अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। उसे अपनी सुरक्षा और मृत्यु का भय है। बीमारियां, लड़ाईयां और अनेक समस्याएं मनुष्य को चारों ओर से घेरे हुए हैं। यह दर्शाता है कि पाप मनुष्य को क्या से क्या बना देता है।

परमेश्वर की पुस्तक पवित्र बाइबल हमें बताती है कि आरम्भ में जब मनुष्य को परमेश्वर ने बनाया था तो उस समय वह सिद्ध था, अर्थात् उसमें कोई पाप नहीं था। वह परमेश्वर की आज्ञा पर चलता था और सब कुछ उसकी इच्छानुसार करता था। परन्तु एक दिन मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा को तुच्छ समझकर अपनी इच्छा का उपयोग किया और वह काम किया जिसे करने को परमेश्वर ने उसे मना किया था। मनुष्य जानता था कि परमेश्वर ने उससे कहा था कि जिस दिन तू मेरी आज्ञा को तोड़ेगा उसी दिन तू मर जाएगा। किन्तु मनुष्य ने परमेश्वर की बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। आज इस घटना के हजारों वर्ष बाद भी मनुष्य में कोई अन्तर नहीं आया है। वह परमेश्वर की आज्ञाओं के विरोध में निरन्तर अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। बाइबल कहती है, कि पाप की मजदूरी मृत्यु है। अर्थात् प्रत्येक मनुष्य मृत्यु की दशा में है, क्योंकि पाप के कारण वह परमेश्वर से अलग है।

किन्तु एक ओर जबकि हमें बाइबल में यह शोकपूर्ण समाचार मिलता है। दूसरी ओर परमेश्वर की पुस्तक में हमें यह शांतिदायक सुसमाचार मिलता है, कि जिस वस्तु को

मनुष्य ने अदन में खोया था उसे फिर से मनुष्य को देने के लिए परमेश्वर यीशु मसीह में होकर पृथ्वी पर आ गया। क्या आपने सुना? जी हां, जिस जीवन को मनुष्य को फिर से देने के लिए परमेश्वर यीशु मसीह में होकर जगत में आ गया। कितनी बड़ी प्रसन्नता की बात है यह ! कुछ वस्तुएं ऐसी हैं जिनके महत्व को हम केवल तब ही समझ पाते हैं जब हम उन्हें खोकर फिर से प्राप्त करते हैं। मनुष्य की आंखें शरीर में बहुत ही महत्वपूर्ण अंग हैं। परन्तु आंखों के कारण हमें कोई विशेष प्रसन्नता नहीं है। हम अपनी आंखों को रात-दिन इस्तेमाल करते हैं। जब से हमने जन्म लिया है वे अपने स्थान पर हैं। उन्हें हम कोई खास महत्व नहीं देते। परन्तु मान लीजिए यदि हम अपनी आंखें खो बैठें? तब हमें वास्तव में अपनी आंखों के महत्व का ज्ञान होगा। अर्थात जब हम किसी वस्तु को खो बैठते हैं केवल तभी उसके महत्व को हम पहिचानते हैं। किन्तु जबकि खोना दुख की बात है, दूसरी ओर, पाना प्रसन्नता की बात है। और उस मनुष्य की प्रसन्नता कितनी बड़ी होगी जो अपनी आंखों को खो देने के बाद उन्हें फिर से प्राप्त कर ले! परन्तु मित्रो, प्रभु यीशु ने एक जगह कहा था, कि मनुष्य के लिए काना होकर जीवन में प्रवेश करना इससे भला है कि वह दो आंख रखते हुए नरक की आग में डाला जाए। (मत्ती 18:10)। यानी जीवन में प्रवेश करना आंखों को प्राप्त करने से भी बहुत बड़ी बात है। क्योंकि यदि मनुष्य उस जीवन को प्राप्त नहीं कर लेता जिसे उसने अदन में खोया था तो वह आंख और शरीर के सारे अंग रखते हुए भी एक मरी हुई दशा में है। उसका जीवन परमेश्वर के बिना और उस से दूर और अलग है। परन्तु यदि वह उस जीवन को प्राप्त कर लेता है, जो मनुष्य को परमेश्वर के ही पास मिलता है, तो चाहे वह मनुष्य अंगहीन ही क्यों न हो वह धन्य है क्योंकि परमेश्वर के राज्य में उसे किसी वस्तु की घटी न होगी।

क्या आपने उस जीवन को प्राप्त कर लिया है? तथा आप की संगति सच्चे और जीवते परमेश्वर के साथ है? क्या अपने परमेश्वर के साथ अपना मेल कर लिया है? मित्रो, बाइबल का सुसमाचार यह है कि जिस जीवन को मनुष्य ने आदम के द्वारा अदन में खोया था, उसी जीवन को आज हम परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में फिर से प्राप्त कर सकते हैं। और यदि मनुष्य अपनी आत्मा की खोई हुई दशा से परीचित है। यदि मनुष्य अनन्त जीवन की विशेषता से परीचित है। तो उसके लिए इस से बढ़कर और कोई प्रसन्नता का समाचार नहीं हो सकता कि वह अपने खोए हुए जीवन को फिर से प्राप्त कर सकता है। वह फिर से परमेश्वर की संगति में वापस आ सकता है, और उसके साथ अपना मेल कर सकता हैं। मित्रो, यह हम सब के लिए सुसमाचार है। यह हम सबके लिए परमेश्वर की ओर से खुशी का एक पैगाम है और यह खुशी का पैगाम हमें परमेश्वर की पुस्तक पवित्र बाइबल में मिलता है। बाइबल की पहिली किताब में हमें यह शोकपूर्ण समाचार मिलता है, कि मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी, और वह परमेश्वर से अलग हो गया। किन्तु बाइबल की अंतिम पुस्तक में हमें यह सुसमाचार मिलता है कि मनुष्य फिर से परमेश्वर की संगति में वापस आ सकता है। बाइबल कहती है। परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच होगा, वह उनके साथ रहेगा, और वे सब उसके लोग होंगे ओर वह उनका परमेश्वर होगा। और परमेश्वर उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद

मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी। (प्रकाशितवाक्य 21:3, 4)। और इसका कारण यह है, कि परमेश्वर यीशु में होकर स्वर्ग से पृथ्वी पर उतर आया। परमेश्वर ने यीशु को मनुष्य और अपने बीच में एक मध्यस्थ ठहराया है, ताकि उसके द्वारा हम सब परमेश्वर के साथ फिर से अपना मेल कर लें।

पवित्र बाइबल में लिखा है, ''इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की; उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रकट करे। बरन इसी समय उसकी धार्मिकता प्रकट हो; कि जिससे वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे, उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो।'' इस कारण, ''सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई। और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया अर्थात परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया।'' और वह ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।'' (रोमियों 3:23-28; 2 कुरिन्थियों 5: 17-21)।

इसका अर्थ यह है, मित्रो, कि परमेश्वर हमें यह खुश-खबरी दे रहा है कि उसने अलग करनेवाली उस दीवार को जो मनुष्य को परमेश्वर से अलग किए हुए थी यीशु के द्वारा नाश करवा दिया है। यीशु मसीह में हम एक नई सृष्टि बन जाते हैं; उसमें होकर हम अपने दोष से मुक्त हो जाते हैं। क्योंकि यीशु जगत के पापों का प्रायश्चित है। मनुष्य का उद्धार करने के लिये परमेश्वर ने अपने वचन को मनुष्य बनाया। परमेश्वर के पुत्र के अतिरिक्त सारा जगत पापी था। परन्तु जगत के अपराधों का दोष परमेश्वर ने जगत पर नहीं लगाया। इसके विपरीत उसने अपने उस पुत्र को जो पाप से अज्ञात था जगत के लिए पाप ठहराया। उसके ऊपर परमेश्वर ने जगत के सारे पापों को रख दिया। और फिर अपने होनहार के ज्ञान से उसने मनुष्यों के हाथों से यीशु को क्रूस पर मृत्यु का दण्ड दिलवाया। यूँ परमेश्वर ने अपनी धार्मिकता को प्रगट किया क्योंकि उसने यीशु में पाप को दण्डित किया, और उसमें मनुष्य को धर्मी बनाकर अपना मेल मनुष्य के साथ कर लिया।

परन्तु महत्वपूर्ण प्रश्न है, कि क्या आप यीशु में हैं? क्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है कि हम यीशु में होकर, जो हमारे पापों का प्रायश्चित है, परमेश्वर की धार्मिकता बनते हैं, और केवल तभी परमेश्वर के साथ हमारा मेल होता है। क्या आप यीशु में अपने पूरे मन से विश्वास करते हैं? क्या आप उसे सब लोगों के सामने मानने को तैयार है? क्या आज आप अपने सब पापों से मन फिराकर यीशु के पीछे चलने को तैयार हैं? क्या आप अपने सब पापों की क्षमा के लिए, यीशु की आज्ञानुसार, बपतिस्मा लेने को तैयार हैं? मित्रो, आज्ञा न मानने के कारण मनुष्य परमेश्वर से दूर है। परन्तु उसकी आज्ञा मानकर हम फिर से उसके पास आ जाते हैं। इस जगत में आप इससे बड़ा और कोई दूसरा काम

नहीं कर सकते कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करके उसके साथ अपना मेल कर लें, और फिर इस मेल के सुसमाचार को उन लोगों तक पहुंचाएं जो परमेश्वर के इस जीवन-दायक सुसमाचार से अनजान हैं। प्रभु आप सबको अपनी अशीष दे।

कलीसिया का संगठन

जे. सी. चोट

यीशु मसीह ने कलीसिया को बनाया (मत्ती 16:18)। कलीसिया समस्त संसार में से बुलाए हुए लोगों से मिलकर बनी हुई है (कुलुस्सियों 1:13, 14)। यह उद्धार पाए हुओं लोगों की मंडली है (प्रेरितों 2:47)। यह मसीह की आत्मिक देह है (कुलुस्सियों 1:18), व केवल एक ही है। (इफिसियों 4:4)।

यद्यपि कलीसिया स्वभाव में सार्वदेशिक है, यह सैकड़ों व हज़ारों स्थानीय मंडलियों से मिलकर बनी हुई है, और प्रत्येक मंडली अनेक सदस्यों से मिलकर बनी हुई है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि कलीसिया का नियंत्रण राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय नहीं है परन्तु स्थानीय है। दूसरे शब्दों में, प्रभु की कलीसिया का पृथ्वी पर न तो कोई प्रधान है और न ही कोई प्रधान-कार्यालय है।

पवित्रशास्त्र शिक्षा देता है कि मसीह कलीसिया का सिर (प्रधान) है। इन पदों पर ध्यान दें: "और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया : और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।" (इफिसियों 1:22, 23)। "क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्ता है।" (इफिसियों 5:23)। "और वही देह अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।" (कुलुस्सियों 1:18)। अब यह पद क्या शिक्षा देते है? जैसे कि पहले कहा जा चुका है, कि मसीह देह का सिर है, व देह कलीसिया है। सिर कितने है? केवल एक, और वह मसीह है, इस पदवी में उसने किसी को भी साझी नहीं बनाया।

जैसे कि कलीसिया अनेक स्थानीय मंडलियों से मिलकर बनी हुई है, और जबकि मसीह कलीसिया का सिर है, तब इसका अर्थ यह हुआ कि वह प्रत्येक स्थानीय मंडली अर्थात् स्थानीय कलीसिया का सिर है, और इसी प्रकार से कलीसिया के प्रत्येक सदस्य का भी। इसी बात को ध्यान में रख कर, पौलुस ने कहा, "सो मैं चाहता हूं, कि तुम यह जान लो, कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।" (1 कुरिन्थियों 11:3)।

फिर, हर एक स्थानीय मंडली का अपना निजि संगठन होना चाहिए। इसका सिर (प्रधान) मसीह है, सदस्यों में से अध्यक्ष तथा सेवक नियुक्त करने चाहिए जो कलीसिया

की आत्मिक और भौतिक आवश्यकताओं की देखभाल करें। अध्यक्षों का कार्य सदस्यों की आत्मिक चौकसी करना है (प्रेरितों 20:28), जबकि सेवकों का कार्य भौतिक आवश्यकताओं की ओर ध्यान देना है (प्रेरितों 6)। यह भी ध्यान में रहे कि पवित्रशास्त्र हमें बतलाता है कि मंडली का नियंत्रण एक अध्यक्ष अथवा एक सेवक के पास नहीं होना चाहिए, इसके विपरीत प्रत्येक मंडली में एक से अधिक अध्यक्षों और एक से अधिक सेवकों को होना चाहिए। ऐसे ही एक मंडली के अध्यक्ष और सेवक दूसरी मंडली या मंडलियों पर अधिकार नहीं रखते। मंडलियां आपस में सहभागिता रखती है परन्तु एक दूसरे के ऊपर अधिकार नहीं रखती।

अध्यक्ष, पास्टर, बिशप, और प्रेज़बिटर शब्द एक ही प्रकार का कार्य करने वाले व्यक्ति को संबोधित करते हैं। इसलिये एक अध्यक्ष या पास्टर, एक बिशप इत्यादि भी मसीही कार्य को दर्शाता है। 1 तीमुथियुस 3:1-7 में प्रेरित पौलुस ने बहुतेरी योग्यताओं का वर्णन किया, "यह बात सत्य है, कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, तो वह भले काम की इच्छा करता है। सो चाहिए कि अध्यक्ष निर्दोष और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, पहुनाई करने वाला, और सिखाने में निपुण हो। पियक्कड़ या मारपीट करने वाला न हो; वरन कोमल हो, और न झगड़ालू और न लोभी हो। अपने घर का अच्छा प्रबंध करता हो, और लड़के वालों को सारी गंभीरता से आधीन रखता हो। (जब कोई अपने घर ही का प्रबंधन करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली क्या करेगा)। फिर यह कि नया चेला न हो, ऐसा न हो, कि अभिमान करके शैतान का सा दंड पाए। और बाहरवालों में भी उसका सुनाम हो ऐसा न हो कि निन्दित होकर शैतान के फंदे में फंस जाए।" इन्हीं योग्यताओं के विषय में तीतुस 1:5-9 में भी हम पढ़ते हैं। इसलिये कलीसिया में हर एक व्यक्ति अध्यक्ष नहीं हो सकता। केवल योग्य व्यक्ति ही नियुक्त किए जाने चाहिए, और तौ भी, प्रत्येक मंडली में एक से अधिक अध्यक्षों तथा सेवकों को होना चाहिए। उन मंडिलयों में जहां कि ऐसे व्यक्ति न हों जो अध्यक्ष बन सकें, कलीसिया में पुरुषों को सब कार्य की देखभाल उस समय तक करनी चाहिए जब तक कि वहां पर ऐसे योग्य पुरुष न हो जो कि अध्यक्ष या ऐलडर नियुक्त किये जा सके।

अध्यक्षों के साथ सहायक कार्य करने के लिये सेवकों को भी नियुक्त करना चाहिए। सेवकों को चाहिए कि वे स्थानीय अध्यक्षों के निर्देशन में कार्य करें। इनकी योग्यताओं का वर्णन भी पौलुस ने यूंह किया: "वैसे ही सेवकों को भी गंभीर होना चाहिए, दो रंगी, पियक्कड़ और नीच कमाई के लोभी न हो। पर विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखें। और ये भी पहिले परखे जाएं, तब यदि निर्दोष निकलें, तो सेवक का काम करें। इसी प्रकार से स्त्रियों को भी गंभीर होना चाहिए. दोष लगाने वाली न हो, पर सचेत और सब बातों में विश्वासयोग्य हो। सेवक एक ही पत्नी के पति हो और लड़के वालों और अपने घरों का अच्छा प्रबंध करना जानते हो। क्योंकि जो सेवक का काम अच्छी तरह से कर सकते हैं, वे अपने लिये अच्छा पद और उस विश्वास में, जो मसीह यीशु पर है, बड़ा हियाव प्राप्त करते हैं। (1 तीमुथियुस 3:8-13)।

यह कलीसिया का ईश्वरीय संगठन है। यीशु मसीह सिर (प्रधान) है, व प्रत्येक

मंडली में, मंडली के अपने अध्यक्ष और सेवक हो। इनके अधिकार में प्रचारक, शिक्षक तथा सदस्य हो। प्रभु द्वारा दिए गए संगठन के अनुसार, यदि एक मंडली सत्य से फिर जाए, तो दूसरी मंडलियां विश्वासी बनी रह सकती हैं। अथवा एक से अतिरिक्त सारी मंडलियां सत्य से फिर जाएं, तब यह संभव है कि वह एक विश्वासी बनी रहे। प्रभु की योजना अनुसार प्रत्येक मंडली का संगठन स्वाधीन है, अर्थात् दूसरी मंडलियों से स्वतंत्र है। उनका आपसी संगठन मनुष्यों द्वारा बनाए हुए नियमों के अनुसार नहीं है, परन्तु प्रेम के द्वारा है। इसलिये वे एक-दूसरे के साथ सहभागिता रखती है, और साथ मिलकर कार्य करती है, क्योंकि वे सब मसीह में एक है। परमेश्वर की इच्छा में बदलाव नहीं लाया जा सकता।

पवित्रशास्त्र में हम कहीं भी नहीं पढ़ते कि पतरस अथवा कोई अन्य व्यक्ति कलीसिया का सिर (प्रधान) रहा हो। हम कहीं भी नहीं पढ़ते कि एक अध्यक्ष (बिशप, पास्टर) या प्रचारक एक से अधिक मंडलियों पर अधिकार रखता हो। इसी प्रकार से क्लेरजी (पादरी लोग) और लेइटी के विषय में भी हम कहीं नहीं पड़ते। कलीसिया के परमेश्वरीय संगठन से अधिकांश लोग फिर गए है, और इतनी अधिक फूट व विभाजन का यह एक मूल कारण है। इसलिये, आइये हम बाइबल के पास वापस जाने का निश्चय करें, और क्लीसिया के संगठन के उस सच्चे आदर्श अर्थात् नमूने को स्वीकार करें जो हमें पवित्रशास्त्र में मिलता हैं।

शून्य कर दिया

बेटी बर्टन चोट

जब परमेश्वरत्व की बात आती है, तो पुस्तकों और लेखों में उसका वर्णन इस प्रकार नहीं किया जाता कि उससे यह समझ में आए कि परमेश्वर एक होते हुए भी अनेक है, अर्थात् परमेश्वरत्व में एक से अधिक आत्मिक व्यक्तित्व हैं। जैसे कि उद्धार पाने के सम्बंध में यदि कोई यह कहे कि मनुष्य का उद्धार केवल विश्वास से ही हो सकता है तो ऐसा मानना अनुचित होगा, विपरीत इसके कि कोई यह मान सकता है कि बाइबल ऐसा सिखाती है। क्योंकि जबकि विश्वास लाना तो ज़रुरी है, किन्तु केवल विश्वास करने से ही उद्धार नहीं मिल सकता प्रभु की आज्ञाओं को मानना भी आवश्यक है। ऐसे ही यदि हम परमेश्वर के राज्य और उसकी कलीसिया के बारे में सीखना चाहते हैं तो परमेश्वर के लिखे वचन को ठीक से काम में लाकर ही हम जान सकते हैं, कि इस विषय पर बाइबल क्या सिखाती है।

ऐसे ही परमेश्वरत्व को जानने के लिये भी ज़रूरी है। इस विषय में यदि हम इस बात पर विशेष ध्यान न दें कि जब पृथ्वी पर परमेश्वर के पुत्र का जन्म हुआ था, तो परमेश्वरत्व के सम्बंध में एक विशेष अंतर उत्पन्न हो गया था, और इसी के साथ परमेश्वर और मनुष्य के सम्बंध में भी एक खास मोड़ आ गया था। तो हम परमेश्वरत्व

को ठीक से नहीं समझ सकते। इसलिये इस विषय पर इसी दृष्टिकोण से देखना आवश्यक हो जाता है, कि जो बात बाइबल में हम पढ़ रहे हैं उसे कब लिखा गया था? अर्थात् क्या वहां संयुक्त परमेश्वरत्व की बात हो रही है, वचन के देहधारी होकर पृथ्वी पर आने से पहले की या उसके बाद की? यदि इस खास बात को ध्यान में रखकर बाइबल अध्ययन किया जाए, तो अनेकों बातें जो अक्सर समझने में कठिनाई लाती हैं समझ में आ जाएंगी।

इसी प्रकार, इस बात को भी समझने के लिये कि परमेश्वर और मनुष्य का सम्बंध आरम्भ से किस प्रकार रहा है, परमेश्वर के वचन को ठीक से काम में लाना ज़रूरी है। इस बारे में अक्सर कुछ लोग ऐसा समझ लेते हैं कि परमेश्वर आरंभ में तो लोगों के साथ उनके परिवारों के मुखियों के द्वारा सम्बंध रखता था, पर जब यह उपाय कारगर सिद्ध नहीं हुआ तो परमेश्वर ने लोगों को मूसा के द्वारा अपनी व्यवस्था दे दी थी, जिसके द्वारा वह अपनी चुनी हुई प्रजा इस्राएलियों के साथ सम्बंध रखता था। और जब इस्राएलियों ने परमेश्वर की आज्ञाओं पर चलना छोड़ दिया था, तो परमेश्वर ने यीशु मसीह को भेजा था। उसी के द्वारा मसीहीयत ने जगत में प्रवेश किया था और अब, यदि लोग परमेश्वर की इच्छानुसार चलना चाहते हैं तो वे मसीह की व्यवस्था को मानकर ही ऐसा कर सकते हैं।

विशेष बिन्दु

जब कि ऊपर लिखी बातें परमेश्वर और मनुष्य के बीच सम्बंधों पर एक प्रकार से प्रकाश तो अवश्य डालती हैं, परन्तु ऐसा समझ लेना कि परमेश्वर ने कुछ करना चाहा और वह उपाय कारगर सिद्ध नहीं हुआ, गलत सुझाव है। परमेश्वर ने ऐसा कदापि नहीं किया, कि उसने एक उपाय किया और जब वह असफल रहा तो उसने उसके स्थान पर दूसरा उपाय किया। इसके विपरीत, परमेश्वर को आरंभ से ही ज्ञात था कि मनुष्य पाप करके उससे अलग हो जाएगा। उसे यह भी मालूम था कि मनुष्य को उसके पाप से उद्धार पाने के लिये क्या आवश्यक होगा। इसलिये, जो कुछ भी परमेश्वर ने किया या होने दिया, उस सबका केवल एक ही उद्देश्य था:

अर्थात्, मनुष्य का पाप से उद्धार।

प्रकाशितवाक्य 13:8 में लिखा है, मेम्ना ''जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है।''

2 तीमुथियुस 1:9 में लिखा है, कि मसीही लोग बुलाए गए हैं,

''...उसके उद्देश्य और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है।''

परमेश्वर की योजना में, मनुष्य का पाप से उद्धार करना, एक विशेष बिन्दु के समान रहा है: जिसे पूरा करने के लिये वचन का यीशु मसीह के रूप में पृथ्वी पर जन्म लेकर आना और जगत के पापों का प्रायश्चित करने को उसका बलिदान देना आवश्यक था। इसी एक विशाल तथा आवश्यक काम को पूरा करने के लिये परमेश्वर ने प्रत्येक अन्य कार्य को किया था या होने दिया था।

इन सब बातों को ध्यान में रखकर, अब हम उस विषय पर ध्यान देंगे जिस पर हमने पिछले अध्याय में चर्चा की थी, और विशेषकर इस प्रश्न पर ध्यान केन्द्रित करेंगे कि, वचन को जिस तरह से पुराने नियम में प्रस्तुत किया गया है, नए नियम में उसी वचन को एक दूसरे रूप में क्यों दर्शाया गया है? जबकि पुराने नियम में उसे परमेश्वर के समान और परमेश्वर के तुल्य दिखाया गया है तो फिर नए नियम में उसे ऐसे क्यों दिखाया गया है कि वह परमेश्वर के अधीन है? इस विशाल बदलाव का क्या कारण है?

फिलिप्पियों 2:5-8

फिलिप्पियों 2:5-8 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

''जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो; जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां क्रूस की मृत्यु भी सह ली।''

इन बातों को ध्यान में रखकर, जब हम यूहन्ना 1:1 को पढ़ते हैं, तो हम इस प्रकार देखते हैं:

''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।'' किन्तु जब 'समय पूरा हुआ' था, अर्थात् जब परमेश्वर की दृष्टि में उचित समय आया था (गलतियों 4:4), तो वचन ने अपने आपको उस सब महिमा और सर्वोच अधिकार से जो उसे स्वर्ग में परमेश्वरत्व में स्वयं प्राप्त था, अर्थात् वह सब कुछ जो उसी का था, उस सबको उसने अपने आप छोड़ दिया था, त्याग दिया था; अर्थात् उसने पृथ्वी पर एक मनुष्य के रूप में जन्म लेकर अपने आपको शून्य बना दिया था।''

शून्य कर देने का अभिप्राय

अब इस बात पर भी विचार करें कि शून्य कर देने का अभिप्राय क्या है? सबसे पहले तो हमें यह समझना चाहिये कि इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उसने अपना अस्तित्व, अर्थात् जिस आत्मिक अस्तित्व में वह था, उसे खो दिया था, या उसे त्याग दिया था। जिस प्रकार से मनुष्य का आत्मिक अस्तित्व हमेशा के लिये है, उसी प्रकार से परमेश्वरत्व का आत्मिक अस्तित्व भी सदाकाल के लिये है। इसलिये उसका अस्तित्व अभी भी वही था जो स्वर्ग में था। ऐसे ही, इसका अभिप्राय यह भी नहीं है कि उसने अपनी उन विशेषताओं को त्याग दिया था जो उसमें थीं। अर्थात् उसने अपनी पवित्रता को नहीं खोया था, क्योंकि यदि ऐसा होता तो वह अपवित्र बन जाता। वह प्रेम था, इसलिये उसने अपने प्रेम की विशेषता को भी नहीं खोया था, क्योंकि यदि ऐसा होता तो वह प्रेम-रहित बन जाता। ऐसे ही वह सच्चा न्यायी था इसलिये उसने अपनी इस विशेषता को भी नहीं खोया था, क्योंकि ऐसा करके वह अन्यायी बन जाता। दया के बिना वह दयाहीन् बन जाता। और यदि वह अपनी सच्चाई की विशेषता को खो देता तो वह असत्य बन जाता। अर्थात् यहां कहने का अभिप्राय यह है, कि ईश्वरत्व की सिद्धता की इन सभी विशेषताओं में से किसी एक को भी उसने अपने से नहीं त्यागा या खोया था, वे सारी

की सारी विशेषताएं उसमें तब भी विद्यमान थी जब वह, वचन, देहधारी होकर पृथ्वी पर आ गया था। तो फिर उसने उस समय क्या त्यागा था जब उसने अपने आप को शून्य कर दिया था? उसने अपनी विशेषताओं से अपने आप को शून्य नहीं बना लिया था, परन्तु उसने अपने उन स्वयं के अधिकारों को त्याग दिया था जो परमेश्वरत्व में उसके थे। अर्थात् परमेश्वरत्व में एक समानता के स्तर से उसने अपने आपको नीचे कर लिया था। परिणाम स्वरूप उसने अपने आपको परमेश्वर के अधीन करके आज्ञाकारी बना लिया था, जिस प्रकार से मनुष्य परमेश्वर के अधीन है। अर्थात् जिस प्रकार से परमेश्वर सब कुछ जानता है, सर्वशक्तिमान है, सर्व-विद्यमान है, इन सब अधिकारों से उसने अपने आपको वंचित कर लिया था। परिणाम स्वरूप उसने स्वयं को परमेश्वर पर आश्रित बना लिया था। अब वह, वचन, स्वयं को शून्य बनाकर एक मनुष्य की तरह बन गया था।

दूसरा आदम

इस प्रकार, जब वचन ने मनुष्य बनकर पृथ्वी पर जन्म लिया था तो वास्तव में वह 'दूसरा आदम' था: देहधारी मनुष्य अर्थात् ईश्वर-मनुष्य। (1 कुरिन्थियों 15:21, 22, 45-49)। मनुष्य शरीर है अर्थात् वह भौतिक देह है और वह आत्मा भी है अर्थात् परमेश्वर के अत्मिक स्वभाव पर रचा हुआ एक प्राणी है। यीशु मसीह, अर्थात् वचन, एक मनुष्य की देह में प्रकट हुआ था, परन्तु वह, वचन, वही था जो स्वर्ग में परमेश्वरत्व में परमेश्वर के साथ था। मनुष्य के भीतर स्वयं अपना कुछ भी नहीं है। जो कुछ भी मनुष्य के भीतर है वह उसे परमेश्वर की ओर से ही मिला है। इसलिये मनुष्य पूर्णरूप से परमेश्वर के अनुग्रह पर ही आश्रित है। दूसरी ओर, वचन ने, जैसे कि हम आगे देखेंगे, उस सब अधिकार को, जो स्वयं उसका और उसमें था, त्याग दिया था, और वह अपनी ही इच्छा से परमेश्वर के अधीन हो गया था, उसी प्रकार से जिस प्रकार से मनुष्य है। शून्य कर देने का अर्थ वास्तव में यही है। पृथ्वी पर एक मनुष्य की देह में जन्म लेकर उसने अपने आप को छोटा बनाकर अपने आपको सीमित कर लिया था।

100 प्रतिशत परमेश्वर तथा 100 प्रतिशत मनुष्य?

मसीह पर विचार करते हुए यदि हम इस बात को ध्यान में नहीं रखते कि पृथ्वी पर आकर उसने अपने आप को किस प्रकार शून्य बना लिया था, तो हम पृथ्वी पर के उसके अस्तित्व को सही तरह से कदापि नहीं समझ सकते। वास्तव में, इस विशेष बात को ध्यान में न रखने के कारण ही कुछ लोगों का ऐसा मत है कि जब मसीह पृथ्वी पर था तो वह 100 प्रतिशत परमेश्वर था और 100 प्रतिशत मनुष्य भी था, जैसे कि मानो उसकी एक ही देह में अलग-अलग प्रकार के दो व्यक्तित्व थे। सो जब उसने कोई अद्‌भुत काम किया था तो समझा जाता है कि वह उसने इसलिये किया था क्योंकि वह परमेश्वर था। ऐसे ही जब उसकी परीक्षा हुई थी और जब उसे मृत्यु का सामना करना पड़ा था, तो समझा जाता है कि वह सब उसके साथ इसलिये हुआ था क्योंकि वह एक मनुष्य था; क्योंकि परमेश्वर की परीक्षा तो हो नहीं सकती और न ही परमेश्वर मर सकता है।

पर क्या यह दृष्टिकोण सही है? क्या यीशु मसीह समय के हिसाब से पृथ्वी पर अपने आप को बदल लेता था? यानि परिस्थिति अनुसार क्या वह अपने आपको कभी

परमेश्वर और कभी मनुष्य के रूप में ढाल लेता था? क्या वह 100 प्रतिशत परमेश्वर और 100 प्रतिशत मनुष्य था?

वास्तव में सच्चाई यह है कि ऐसा कदापि नहीं था। उसका व्यक्तित्व 200 प्रतिशत का नहीं था। परन्तु, वह मनुष्य की एक ऐसी देह थी जिसके भीतर ईश्वरत्व का वह रूप था जिसने अपने आप को शून्य कर दिया था, वह वचन था- एक ईश्वरीय व्यक्तित्व, परन्तु ईश्वरीय अधिकारों से वंचित था।

परन्तु, यीशु मसीह ने पृथ्वी पर बहुत बड़े-बड़े आश्चर्यपूर्ण काम भी किये थे। यह कैसे सम्भव हुआ था? वे सब काम उसने स्वयं अपने अधिकार से या अपनी शक्ति से नहीं किये थे, क्योंकि उन सब से तो उसने अपने आप को शून्य बना लिया था। परन्तु फिर भी यदि वह उन सब अद्‌भुत कामों को करने के योग्य अपने आप को बना भी सकता था तो फिर वह 'अपने भाईयों के समान' कैसे बनता? (इब्रानियों 2:17)।

पवित्र आत्मा का काम

तो फिर किसकी सामर्थ से वे सब अद्‌भुत काम यीशु मसीह ने पृथ्वी पर किये थे? उन सब कामों को उसने पवित्र आत्मा की सामर्थ पाकर किया था। पवित्र आत्मा, जो परमेश्वरत्व में वचन के साथ था, उसी की सामर्थ उसे उस समय प्राप्त हुई थी जब वह बपतिस्मा लेकर जल में से ऊपर आया था (यूहन्ना 3:34) बपतिस्मा लेने के उपरान्त उसे पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ था (लूका 3:21, 22)। किन्तु यदि यीशु पृथ्वी पर 100 प्रतिशत परमेश्वर और 100 प्रतिशत मनुष्य के रूप में आया होता, तो फिर उसे पवित्र आत्मा की सामर्थ की क्या आवश्यकता होती? परन्तु जैसे कि हमने पहले देखा है, कि वचन ने अपने आप को उस सब सामर्थ और अधिकार से खाली यानि शून्य कर दिया था, और अपने आपको मनुष्य के रूप में बनाकर वह मनुष्यों की ही तरह सामर्थ-रहित और परमेश्वर पर आश्रित बन गया था। किन्तु, फिर भी संसार में सब लोगों को यह बताने के लिये और उन पर यह प्रमाणित करने के लिये कि वास्तव में वह कोई मनुष्य मात्र नहीं है पर वह यथार्थ में परमेश्वर का पुत्र है, और वह स्वर्ग से पृथ्वी पर मनुष्यों का उद्धार करने के लिये आया है, यह आवश्यक था कि उसके अद्‌भुत और सामर्थपूर्ण कामों के द्वारा यह बात सब पर प्रमाणित हो जाए। इसलिये उसने अनेकों आश्चर्यपूर्ण सामर्थ के काम किए थे। और उन सब कामों को करने की सामर्थ उसे पवित्र आत्मा के द्वारा प्राप्त हुई थी। इसलिये हम पढ़ते हैं:

''...यीशु पवित्र आत्मा से भरा हुआ.....'' (लूका 4:1)।

''फिर यीशु आत्मा की सामर्थ्य से भरा हुआ गलील को लौटा.....'' (लूका 4:14)।

यीशु ने कहा था, ''मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं'' (मत्ती 12:28)।

नासरत के एक मन्दिर में यीशु ने यशायाह 61:1 में लिखी एक भविष्यवाणी को पढ़ा था, जिस में स्वयं उसी के बारे में यूं लिखा हुआ था:

''प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है....'' (लूका 4:18)।

सो, अब, इन बातों से हम क्या समझते हैं? क्या अपने आप को वचन ने इसलिये शून्य कर दिया था कि वह फिर आत्मा से परिपूर्ण हो जाए? क्या इस प्रकार उसे उन सब कठिनाईयों से बचने का एक साधन मिल गया था जिनसे अकसर सब मनुष्यों को होकर गुज़रना पड़ता है? नहीं। पर वास्तव में आत्मा की भरपूरी जो उसे प्राप्त हुई थी वह इसलिये हुई थी ताकि वह उस काम को पूरा कर सके जिसे करने के लिये वह इस जगत में आया था। जो भी बड़े-बड़े अद्‌भुत काम उसने किये थे, शिक्षाएं दी थीं, वे सब पवित्र आत्मा की सामर्थ से पूरा हुआ था। परन्तु अपने प्रतिदिन के जीवन में वह एक मनुष्य ही था। यीशु मसीह वही वचन था जो आदि में परमेश्वर के साथ था, परन्तु अब वह शून्य था, और मनुष्य का भाई था। जब उसे परीक्षाओं और दुःखों और नाना प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा था तो इन सब का सामना उसे वैसे ही करना पड़ा था जैसे सभी अन्य लोगों को करना होता है। और उसने कहा था, जैसे कि हम सबको भी परमेश्वर के वचन के आधार पर कहना चाहिए कि, ''लिखा है'' (मत्ती 4:4), और वह परमेश्वर से प्रार्थना करने में लौलीन रहा। (लूका 6:12)। दो स्थानों पर हम ऐसा भी पढ़ते हैं, कि जब वह अपनी समस्याओं से होकर निकल चुका था, तो स्वर्गदूतों ने प्रकट होकर उसे सामर्थ्य दी थी। (मत्ती 4:11; लूका 22:43)। क्या कोई स्वर्ग दूत परमेश्वर को सामर्थ्य दे सकता है? नहीं। स्वर्ग दूत ने, यीशु मसीह को, वचन को, जिसने अपने आप को शून्य बना लिया था, मनुष्यों के भाई को, सामर्थ्य दी थी। (इब्रानियों 1:13)।

हमारे उद्धार का कर्त्ता (कप्तान)

बिल डिलन

रॉबर्ट लुईस स्टीवन्सन ने बताया कि दक्षिणी समुद्र के टापुओं के उनके एक समुद्री सफर पर खतरनाक तूफान आ गया, जिससे यात्रियों को लगा कि उनका जहाज डूब जाएगा। एक आदमी लहरों के बीच में से होते हुए बारिश में ऊपरी डेक के ऊपर चला गया। उसने जाकर देखा कि कैप्टन आराम से बैठा है। बड़े आराम से कैप्टन ने जहाज को चलाने का आदेश दिया। वह आदमी दूसरे परेशान या चिंतित यात्रियों के पास वापस जाकर उनके साथ सिमटकर कहने लगा, ''मैंने कैप्टन का चेहरा देखा है। सब ठाक है।''

2 कुरिन्थियों 5:14 में हम पढ़ते हैं, ''मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है।'' यहां पर इस्तेमाल किए गए शब्दों का मूल अर्थ है, ''जोड़े रखता है।'' मसीह वह गोंद हैं जो हमारे जीवनों को जोड़े, रखती है ताकि हम खरे, ईमानदार खालिस, और सच्चे लोग बन सकें।

हमारे समय की सब चिंताओं और झगडों, परेशानियों और उलझनों और उस सारी बेचैनी के बीच जो हमारे सामने आ सकती है, हम अपने मन की लगन और जीवन की इच्छा को अपने उद्धार के कप्तान पर लगाकर बेखौफ होकर जीवन का सामना करने की हिम्मत करते हैं (इब्रानियों 2:10)। यीशु प्रकट किया गया, छूड़ाने वाला, जी उठा, राज्य

कर रहा है और लौटने वाला प्रभु है, जिसका नमूना आम तौर हमारे गिर्द रहने वाले अनिश्चितता के अंधेरे को चीर कर जाते प्रकाश की सुनहरी किरण की तरह है।

इब्रानियों 12:2 कहता है कि हम ''विश्वास के कर्त्ता (कप्तान) और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें।'' हम शांति और नई ताजगी के साथ अपनी जिम्मेदारियों को लेने के लिए खड़े होते हैं। मेरी जेम्स ने लिखा है:

मेरी आंखों के सामने यीशु था,
इसलिए मुझे और कुछ दिखाई न दिया।
मेरा ध्यान क्रुस पर दिए जाने वाले
पर इतना लगा हुआ था।

यह जानते हुए कि कप्तान यीशु है मसीही लोग आराम से रह सकते हैं।

परमेश्वर की भलाई

जैक डब्ल्यु. कार्टर

शायद ही कोई ऐसा समय रहा हो जब मैं परमेश्वर की भलाई के बिना रह पाया हूं। इस सम्बन्ध में मुझे लगता है कि अपने अंदर के धन्यवाद को जताने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।

मूर्तिपूजा मनुष्यजाति में बड़ा पाप रहा है। इसका आरम्भ मनुष्य के इतिहास के साथ ही हो गया था और आज तक यह हमारे संसार के बहुत से भागों में बढ़ता जा रहा है।

लगता है कि मेरे मन मैं सबसे पहला प्रश्न यही आता है कि ऐसा क्यों है? इतने प्रेमी परमेश्वर से लोग उन चीजों की उपासना में जो बोल नहीं सकतीं, हरकत नहीं कर सकतीं या प्रेम का अर्थ नहीं बता सकतीं, उनकी पूजा करने के लिए मुड़ने के लिए इतना क्यों तुले हुए हैं?

सदियों से लोग किसी न किसी प्रकार से अपने देवताओं को अपने जीवन देने का प्रयास करते रहे हैं। वे उन्हें खाना खिलाते हैं। (कई बार खून की कुर्बानियां चढ़ाते हैं) इस उम्मीद से कि इससे जीवन थोड़ा आसान हो जाएगा, अंधविश्वास के किसी न किसी रूप को मानते हैं।

हमारे परमेश्वर को खिलाने की आवश्यकता नहीं है। भजन लिखने वाले के द्वारा उसने कहा, ''यदि मैं भूखा होता तो तुझ से न कहता; क्योंकि जगत् और जो कुछ उस में है वह मेरा है'' (भजन 50:12)। उसे नर बलि नहीं चाहिए। इसके सम्बन्ध में उसने साफ-साफ कहा कि ''... मैं ने कभी भी जिसकी आज्ञा नहीं दी, न उसकी चर्चा की और न वह कभी मेरे मन में आया'' (यिर्मयाह 19:5)।

हमारा परमेश्वर हमें गरमायश भरे, सक्रिय प्रेम से प्रेम करना चाहता है। वह हमें चाहता है। वह चाहता है कि हम इस आशा और आश्वासन से जीवन जियें कि हर

परिस्थिति में हम पर नजर रखने के लिए वह हर समय उपलब्ध है। मैं इतना खुश हूं कि हमारे सृजंनहार और पिता के रूप में हमारा ऐसा परमेश्वर है। मुझे बड़ी खुशी है कि वह ऐसा बिल्कुल नहीं है जैसा बहुतों को लगता है कि उसे होना चाहिए।

परमेश्वर के बारे में सही विचार

फ्रैंक चैसर

इस्त्राएलियों को लगता था कि परमेश्वर उनसे घृणा करता है और इस कारण उन्हें जंगल में नष्ट कर देना चाह रहा था (व्यवस्था 1:27)। परमेश्वर के बारे में इस्त्राएलियों के सही विचार न रखने के कारण उन्होंने विद्रोह किया और कनान देश में पहुंचने में उन्हें चालीस वर्ष लग गए। यदि किसी को यह यकीन हो कि परमेश्वर उसका वैरी है, तो वह इस कारण उसका धन्यवाद नहीं कर सकता। संसार में सबसे अलग व्यक्ति, अय्यूब से उसकी सम्पत्ति छीन ली गई और वह अपने दस बच्चों के कफन पर सिर झुकाए टूटे मन से खड़ा था। वह सही था जब उसने यह कहा कि ''यहोवा ने दिया'' परन्तु उसका यह कहना गलत था कि ''और यहोवा ही ने ले लिया'' (अय्यूब 1:21)। यह काम शैतान ने किया था न कि परमेश्वर ने।

अय्यूब परमेश्वर पर उसे तीर मारने (6:4); बिना कारण चोट पर चोट देने (9:17); निर्दोष के जांचे जाने पर हंसने (9:23); उसे पत्ते की तरह तोड़ने (13:25); उसे उक्ता देने और उजाड़ देने (16:7) और सहायता के लिए उसकी पुकार पर ध्यान न देने (19:7) का आरोप लगाने लगा। पूरी सम्भावना है कि परमेश्वर के बारे में अय्यूब के गलत विचार ने उसे मायुस कर देना था यदि परमेश्वर सुधार करने वाली निर्देश के साथ स्वर्ग में से बात न करता। जब प्रकृति आप से बाहर हो जाती है और जीवन और सम्पत्ति में उथल-पुथल मच जाती है, ऐसे भयंकर विनाश को ''परमेश्वर का काम'' बताया जाता है। एक शराबी ड्राइवर सो रहे बच्चे को मौत की नींद सुला देता है और उसका पिता अपने बेटी की जान लेने के लिए परमेश्वर पर दोष लगाने लगता है। कांटों के बिस्तर से आदमी परमेश्वर की ओर देखता है जिससे वह अपनी सारी परेशानी का कारण मानता है और पुकारने लगता है कि मैं ही क्यों? जब किसी का यह मानना हो कि आग से उसका घर लूट लिया गया है, बीमारी से उसकी सेहत और मृत्यु से उसका साथी छीन लिया गया है तो वह ऐसे में परमेश्वर की सेवा प्रेम और धन्यवाद के साथ कैसे कर सकता है?

''क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है'' (याकूब 1:17)। परमेश्वर स्वास्थ्य, सुख और जीवन देता है, न कि मरज. मायूसी और मृत्यु। इसके विपरीत जीवन की हर बुरी चीज संसार में शैतान और उसके प्रभाव के कारण होती है। हमारे लिए आवश्यक है कि हम परमेश्वर के बारे में सही विचार रखें।

कुलुस्से के विश्वासी भाइयों के नाम
(कुलुस्सियों 1:2)
ऑवन डी. आलब्रट

मसीह में उन पवित्र और विश्वासी भाइयों के नाम जो कुलुस्से में रहते हैं। हमारे पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त होती रहे।

कलीसियाओं के नाम लिखते समय पौलुस द्वारा अलग-अलग शब्दों के इस्तेमाल का शायद कोई महत्वपूर्ण कारण नहीं बताया जा सकता। थिस्सलुनीके के, कुरिन्थियों और गलातियों को कलीसियाएं कहकर सम्बोधित किया। रोमियों, इफिसियों, कुलुस्सियों और इफिसियों के नाम पत्र लिखते हुए उसने ''पवित्र लोग'' कहा। ''कलीसिया'' शब्द का अर्थ मसीही लोगों के रूप में संगठित समूह है, जबकि ''पवित्र लोग'' या संत उन लोगों के लिए इस्तेमाल किया गया है जिनसे वह समूह बनता है। उसमें ''पवित्र लोग'' या संत शब्द का इस्तेमाल अपने पत्रों को अधिक निजी स्पर्श देने के लिए किया हो सकता है।

''मसीह में उन पवित्र और विश्वासी भाइयों के नाम जो कुलुस्सें में रहते हैं'' (1:2)

पवित्र लोग (hagioi) का अनुवाद ''संत'' ही किया जाता है। इसके सहजातीय क्रिया शब्द (hagiazo ''पवित्र करना'') का अर्थ किसी विशेष उद्देश्य के लिए ''अलग करना'' है। मसीही लोगों के सम्बन्ध में इसका अर्थ परमेश्वर के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संसार के बुरे व्यवहारों से अलग किए हुए है। पवित्र लोग मसीही समुदाय के भीतर जिन्हें संत घोषित किया गया है। बल्कि यीशु के सभी चेले हैं (प्रेरितों 26:10; रोमियों 8:27; 12:13; 2 कुरिन्थियों 13:13; 16:2; 2 कुरिन्थियों 1:1; इफिसियों 1:1), यानी जिन्होंने सांसारिक जीवन से अपने आपको अलग किया है। (2 कुरिन्थियों 6:17)। उन्हें अंधकार में से मसीह के राज्य में और परमेश्वर की अद्भुत ज्योति में बुलाया गया है (प्रेरितों 26:18; कुलुस्सियों 1:13; 1 पतरस 2:9)। ''पवित्र लोग'' या संत शब्द का इस्तेमाल उनके व्यवहार के पाप रहित होने के लिए नहीं, बल्कि उनके बुलाए जाने के लिए है। इस तथ्य के बावजूद कि कलीसिया के कुछ लोग आत्मिक रूप में बीमार, डॉक्ट्रिन या शिक्षा के सम्बन्ध में परेशान और नैतिक रूप में भ्रष्ट थे, पौलुस ने कुरिन्थुस की मण्डली के लोगों को ''पवित्र लोग'' यानी संत कहा (1 कुरिन्थियों 1:2)।

पौलुस दो अलग-अलग समूहों से बात नहीं कर रहा था जिनमें एक ''पवित्र लोग'' थे और दूसरे ''विश्वासी भाई।'' दोनों अभिव्यक्तियों के साथ केवल एक उपपद (tois) का इस्तेमाल किया गया है जिसका अर्थ है कि ये दो अलग-अलग समूह नहीं, बल्कि दो अलग-अलग प्रकार से वर्णित वही समूह हैं।

रॉबर्ट जी. ब्रेचर और यूजीन ए. निडा ने लिखा है:

यूनानी धर्मशास्त्र का रूप ''पवित्र लोगों'' के साथ [रिवाइज्ड स्टैंडर्ड वर्जन

(RSV)] को विशेषण के रूप में, भाइयों को सुधारकर, जैसे विश्वास योग्य व्यक्ति करता है कि मांग करता प्रतीत होता है, क्योंकि पूरे वाक्यांश के साथ एक ही उपपद है: ''हमारे पवित्र और विश्वासी भाइयों के नाम।''

यही नियम यूहन्ना 3:5 में चलता है, जहां ''जल और आत्मा से'' वाक्यांश में उपसर्ग से (ex) सुझाव देता है कि इसका अर्थ एक जन्म है, न कि दो। एक जन्म में दो तत्व हैं, ''जल और आत्मा।''

यूहन्ना ''आत्मा'' से पहले दूसरा ''से'' (ex) नहीं रखता, जैसे वह दो अलग-अलग घटनाओं का वर्णन कर रहा हो। एक ही मार्ग एक अवसर का वर्णन करता है। इसका अर्थ यह हुआ कि यह एक होना पूरी तरह से अनिश्चित भूतकाल सूचक कर्मवाच्य द्वारा स्थापित होता gennethe है, जिसका अर्थ मूल में जल और आत्मा से ''एक बार जन्म'' है। ...

इन तथ्यों को मिलाने पर यूहन्ना 3:3-5 के किसी हवाले को दो बपतिस्मों या जन्मों (प्राकृतिक जन्म के बाद) अर्थात ''पानी का बपतिस्मा'' और बाद में ''आत्मा का बपतिस्मा'' या धर्मी ठहराए जाने का पूर्व ''पुनर्जीवन'' और बाद में ''आत्मा का बपतिस्मा'' के हवाले को ढूंढ़ने के लिए किसी भी प्रवृत्ति के विरूद्ध सावधान करने वाले होना चाहिए ...

आत्मिक रूप में व्यक्ति केवल एक बार जन्म लेता है और वह जन्म ''जल और आत्मा से'' होता है।

विश्वासी के लिए यूनानी शब्द चपेजवप संज्ञा शब्द ''विश्वास'' (pistis) और क्रिया शब्द ''प्रतीति'' (pisteuo) वाले मूल शब्द से निकला है। यीशु के अनुयायियों के वर्णन के लिए विशेषण के रूप में इसके इस्तेमाल का अर्थ यह नहीं है कि यह शब्द हर बार मसीही लोगों से जुड़ा हुआ है। कोई सेवक अपने स्वामी का विश्वासी (मत्ती 24:45; 25:21, 23), कर्मचारी अपने नियोक्ता का (लूका 12:42; 1 कुरिन्थियों 4:2) कोई अपनी जिम्मेदारियों के प्रति (लूका 16:10) और मसीही व्यक्ति मसीह का (प्रेरितों 16:15) विश्वासी हो सकता है। परमेश्वर और यीशु को विश्वासयोग्य कहा गया है (1 कुरिन्थियों 1:9; 2 थिस्सलुनीकियों 3:3), जैसे परमेश्वर की सेवा करने वाले होते हैं (कुलुस्सियों 1:7; 4:7, 9:1 तीमुथियुस 1:12; इब्रानियों 3:5; 1 पतरस 5:12; प्रकाशितवाक्य 2:13)। यूनानी भाषा में इस शब्द का इस्तेमाल बच्चों के सम्बन्ध में जो माता-पिता के विश्वासयोग्य और आज्ञाकार हैं तीतुस 1:6 में इस्तेमाल किया गया है, जिसमें माता-पिता परिवार के बुजुर्ग के रूप में हैं।

कुलुस्से के भाइयों को ''विश्वासी'' बताया गया है। पौलुस ने उन्हें ''विश्वासी'' शायद उन में अपने भरोसे को दिखाने और उन्हें अपने मसीही चलन में प्रोत्साहित करने के लिए कहा। अभिप्राय यह है कि वे यीशु के वफादार थे, क्योंकि उन्होंने उस में अपना विश्वास रखा था और उसके पीछे ईमानदारी से चल रहे थे। वे धीरज से, बिना डोले और निरन्तर यीशु की सेवा कर रहे थे।

उन का ''भाइयों'' के रूप में होना परमेश्वर की संतान के रूप में उन के आत्मिक

सम्बन्ध पर आधारित था (गलातियों 3:26)। मसीह में आकर और बपतिस्मे में उसे पहनकर वे एक ही परिवार के लोग बन गए थे (गलातियों 3:27)। ''पवित्र लोग'' और ''भाइयों'' चाहे पुरूषवाचक शब्द हैं पर इसमें भाई और बहनें दोनों शामिल हैं। यानी वे मसीह में एक (गलातियों 2:28), उसकी एक देह के अंग हैं (1 कुरिन्थियों 12:13)। मसीही लोगों के रूप में हमें यह समझ होनी आवश्यक है कि हम सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। हम एक ही परिवार के लोग हैं इसलिए हमें इकट्ठे रखने का एक ही बंधन है।

मसीह में होने का अर्थ एक ही आत्मिक दायरे में होना है। यीशु ने उस में होने के विचार का परिचय दिया (यूहन्ना 6:56; 14:20; 15:1-7)। पौलुस ने अपने लेखों में ''मसीह में'' होने की इस अवधारणा को मिला दिया (रोमियों 8:1; 1 कुरिन्थियों 15:18; 2 कुरिन्थियों 5:17; कुलुस्सियों 1:4; 28; 2:5)।

कुलुस्से के लोग ''मसीह में'' थे, क्योंकि उनके विश्वास ने उन्हें ''मसीह में'' बपतिस्मा लेने के लिए प्रेरित किया था (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27)। बपतिस्मे के द्वारा जो लोग मसीह में प्रवेश करते हैं उन्हें ''हर आत्मिक आशीष'' मिली है (इफिसियों 1:3), जिसमें ''अपराधों की क्षमा'' (इफिसियों 1:7), ''अनुग्रह'' (2 तीमुथ्सियुस 2:1), और ''अनन्त जीवन'' (1 यूहन्ना 5:11) शामिल हैं। इफिसियों 2:13 कहता है, ''पर अब जो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो।'' जो लोग यीशु से बाहर हैं उन्हें मसीह से अलग किया गया है यानी वे आशा के बिना और परमेश्वर के बिना और परमेश्वर के बिना हैं (इफिसियों 2:12)।

यह पत्र बेशक उन्हें लिखा गया था, जो कुलुस्से में रहते थे, पर है यह दूसरों के लिए भी (4:16)। पौलुस के पत्रों को प्रेरित पतरस की स्वीकृति मिलती थी और उन्हें भी दूसरे सब पवित्र शास्त्रों के साथ आदर दिया जाना आवश्यक है (2 पतरस 3:15, 16)। उन में हर युग के हर मसीही के लिए निर्देश है। जो कुछ पौलुस ने लिखा है वह यीशु की आज्ञा हैं (1 कुरिन्थियों 14:37)।

एक मूल्यवान भाई
(रोमियों 14:15)
डेविड़ रोपर

एक महत्वपूर्ण अन्तर

आयत 15 का आरम्भ ''क्योंकि'' (gar, ''के लिए कारण दिखाते हुए'') के साथ होता है। यह शब्द सम्भवतया आयत 13 की ओर संकेत करता है, जो कहता है, ''सो तेरा भाई तेरे भोजन के कारण उदास होता है, तो फिर तू प्रेम की रीति से नहीं चलता'' (आयत 15क)। यूनानी भाषा में यहां ''भोजन'' (broma) के लिए सामान्य शब्द है, परन्तु यह मांस की बात करता है जिसे कुछ मसीही लोग तो खाते थे परन्तु दूसरे नहीं खाते थे।

''उदास होता है'' वाक्यांश lupeo अर्थात ''एक मजबूत शब्द'' से लिया गया है, जिसका अर्थ ''शोकित होना, ... दुखित होना। संदर्भ में lupeo का अर्थ भावनात्मक रूप से परेशान होंने से कहीं अधिक के लिए है। अगला वाक्य (आयत 15ख) ''उदास'' होने को (आयत 15ख) नाश होने से मिलाता है। पौलुस एक भाई के आत्मिक रूप से आहत होने अर्थात अनन्तकाल के लिए नष्ट होने की बात कर रहा था।

मांस खाना किसी ''निर्बल'' भाई को उदास, ठेस और गिरा कैसे सकता है, जिससे वह नष्ट हो जाए? इसका बढ़िया उत्तर 1 कुरिन्थियों 8 में मिलता है, जिसमें यही नहीं तो कम से कम ऐसी ही स्थिति का वर्णन है:

सो मूरतों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के खाने के विषय में हम जानते हैं, कि मूरत जगत में कोई वस्तु नहीं, और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं है। ...

परन्तु सब को यह ज्ञान नहीं; परन्तु कितने तो अब तक मूरत को कुछ समझने के कारण मूरतों के सामने बलि की हुई को कुछ वस्तु समझकर खाते हैं, और उन का विवेक निर्बल होकर अशुद्ध होता है। भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं पहुंचाता, यदि हम न खाएं, तो हमारी कुछ हानि नहीं, और यदि खाएं, तो कुछ लाभ नहीं। परन्तु चौकस रहो, ऐसा न हो, कि तुम्हारी यह स्वतन्त्रता कहीं निर्बलों के लिए ठोकर का कारण हो जा जाए। क्योंकि यदि कोई तुझ ज्ञानी को मूरत के मन्दिर में भोजन करते देखे, और वह निर्बल जन हो, तो क्या उसके विवेक में मूरत के सामने बलि की हुई वस्तु के खाने का हियाव न हो जाएगा। इस रीति से तेरे ज्ञान के कारण वह निर्बल भाई जिस के लिए मसीह मरा नाश हो जाएगा (1 कुरिन्थियों 8:4-11)।

डग्लस जे. मू ने एक दूसरी सम्भावना जोड़ी: ''बलवान'' भाई का मांस खाने की अपनी स्वतन्त्रता पर इतराना ''निर्बल'' भाई के लिए ठोकर का कारण हो सकता है जिससे वह बिल्कुल दूर चला जाए। परन्तु पौलुस की मुख्य दिलचस्पी इस बात में थी कि जब ''निर्बल'' भाई ''बलवान'' भाई को मांस खाते देखेगा तो वह भी मांस खाएगा, चाहे उसका विवेक उसे यह बताता हो कि यह गलत है। ऐसा करके वह *पाप* करेगा और *दोषी ठहरेगा* (रोमियों 14:23)।

पहले मैंने ऐसे व्यक्ति को परिवर्तित करने का उदाहरण दिया था जिसे यह सिखाया गया था कि शुक्रवार के दिन मांस खाना गलत है। मैंने सुझाव दिया कि उसके बपतिस्मा लेने के तुरन्त बाद उसे ऐसी शिक्षा के बेतुके पन पर भाषण देने की आवश्यकता नहीं है। मैं इस उदाहरण में जोड़ना चाहता हूं कि आपको ऐसे भाई को अगले शुक्रवार खाने पर बुलाकर उसे टिक्का खिलाने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा करना उसे अपने विवेक के विरूद्ध जाकर पाप करने के लिए प्रेरित करेगा।

मुझे इस बात पर जोर देना आवश्यक है कि हमारा वचन पाठ किसी ऐसी बात को केवल इसलिए गलत नहीं ठहराता कि किसी दूसरे भाई या बहन ने उसे स्वीकार नहीं किया है। प्रचार करने के अपने दर्शकों के अनुभव के बाद मैं आपको बता सकता हूं कि किसी मण्डली में चाहे जो भी किया जाता हे (या नहीं किया जाता), कम से कम एक सदस्य ऐसा अवश्य होगा जो उसे पसन्द न करे। जिस बात को कोई ''पसन्द नहीं करता''

उसे बंद करने से कलीसिया का काम बंद हो सकता है।

एक बार फिर, हमें संतुलन करना है, हमें कुछ नकारात्मक टिप्पणियों के कारण कोई अच्छा काम रोक नहीं देना चाहिए। इसके साथ ही हमें दूसरों के विश्वास के प्रति संवेदनशील होना और कुछ ऐसा करने से बचना आवश्यक है जिससे उन्हें अपने विवेक के विरूद्ध जाना पड़े। जिस भी मण्डली में मैंने सेवा की है वहां ऐसे कुछ लोग होते थे जो इस या उस काम में विवेकपूर्ण ढंग से शामिल नहीं हो पाते थे। हम यह जोर नहीं देते थे कि उन्हें उस बात में भाग लेना आवश्यक है और वे इसे मुद्दा नहीं बनाते थे। वे केवल उसमें भाग नहीं लेते थे ताकि वे अपने विवेक के विरूद्ध न जाएं। हमें उन भाइयों को जो विवेकी होते हैं उनसे अलग करना आवश्यक है जो केवल झगड़ालू होते हैं। यह आसान नहीं होता। कई बार आपको घुटनों के बल परमेश्वर से बुद्धि मांगना आवश्यक होता है (देखें याकूब 1:5)।

प्रेरणादायक समर्पण

भिन्नताओं की चर्चा से हमारा ध्यान उस शक्तिशाली संदेश से हटना नहीं चाहिए, जो पौलुस ने देना चाहा। ''यदि तेरा भाई तेरे भोजन [मांस खाने] के कारण [आत्मिक रूप से] उदास होता है, तो फिर *तू प्रेम की रीति से नहीं चलता*'' (आयत 15क, ख)। पौलुस को इस बात की इतनी चिंता नहीं थी कि कौन सही है और कौन गलत, जितनी इस बात की कि वह प्रेम को दिखाना चाहता था।

रोमियों 13:8 में पौलुस ने आज्ञा दी, ''आपस के *प्रेम* को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो।'' लियोन मौरिस ने लिखा है, ''मसीही लोगों के लिए [,] प्रेम ही मानक है और प्रेम ही प्रेरक।'' हम में से अधिकतर लोग असहमतियों को न पसन्द करते हैं और उन्हें केवल नकारात्मक मानते हैं। यदि हम उन्हें ''मसीही प्रेम को व्यवहार में लाने के अवसरों'' के रूप में देखें तो सहायता मिले।

आवश्यक संकल्प

आयत 15 इस उत्तेजक आदेश के साथ समाप्त होती है: ''जिस के लिए मसीह मरा उस को तू अपने भोजन के द्वारा नाश न कर'' (आयत 15ग; 1 कुरिन्थियों 8:11 से तुलना करें)। फिर पौलुस ने कठोर भाषा का इस्तेमाल किया। ''नाश'' शब्द apollumi से लिया गया है जो ''पूरी तरह से नाश'' करने का संकेत देता है। पूरी तरह से नाश होने का खतरा किसे था? ''जिसके लिए मसीह मरा उसको'' यानी उस भाई को जो प्रभु के लिए इतना मूल्यवान था कि वह उसके लिए क्रूस पर चढ़ गया।

इससे पौलुस के पाठकों के लिए हर बात समझ में आ गई होनी चाहिए। एक ओर तो मांस खाना सही है और दूसरी ओर यह उसके लिए अनन्त विनाश, जिसके लिए यीशु मरा था। जॉन आर डब्ल्यू. स्टॉट ने पूछा ''क्या मसीह ने उससे इतना प्रेम किया कि वह उसके लिए मर गया और क्या हमें उससे इतना प्रेम नहीं करना चाहिए कि हम अपने विवेक को घायल होने से बचाएं? ''पौलुस के शब्दों से हमारे लिए भी विषय परिप्रेक्ष्य में आ जाना चाहिए। अगली बार जब आपका किसी के साथ गम्भीर झगड़ा हो जाए, तो असहमति के विषय की तुलना क्रूस से करो। इनमें से कौन सा महत्वपूर्ण है? पौलुस हम

से कह सकता है:

• ''जिसके लिए मसीह मरा उसको *तू अपनी इच्छा मनवाकर नाश* मत कर।''

• ''जिसके लिए मसीह मरा उसको अपने अधिकारों पर जोर देकर नाश मत कर।''

• ''जिसके लिए मसीह मरा उसको अपनी भावनाओं के आहत होने पर वापस चोट मारकर नाश मत कर।''

ज्योति पाए हुए

(इफिसियों 1:8-10)

जे. लाकहर्ट

जिसे उस ने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया। कि उस ने अपनी इच्छा का भेद उस भले अभिप्राय के अनुसार हमें बताया, जिसे उस ने अपने आप में ठान लिया था। कि समयों के पूरा होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे।

पौलुस द्वारा बताई गई पांचवीं आत्मिक आशीष उस अनुग्रह का बहुत होना है जो हम पर बहुतायत से किया गया (1:8)। ''उस ने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया कि उस ने अपनी इच्छा का भेद उस भले अभिप्राय के अनुसार हमें बताया'' (1:8, 9)। परमेश्वर ने हमें अपने दिल की बात बता दी है।

आयतें 8, 9. सारे ज्ञान और समझ सहित ... उसने जो बताया वो इससे मेल खाता है। व्याख्याकार इस बात पर सहमत नहीं हैं कि यह ज्ञान और समझ परमेश्वर के गुणों को कहा गया है या ये वे दान हैं, जिन्हें परमेश्वर लोगों को देता है। परन्तु कुलुस्सियों के लिए पौलुस की प्रार्थना जो इफिसियों के इस भाग से बहुत मेल खाती है, संकेत देती है कि परमेश्वर ने उन्हें ज्ञान और उस की इच्छा से भरपूर होने पर ज्ञान और समझ देनी थी (कुलुस्सियों 1:9)। अन्य शब्दों में परमेश्वर हमें अपनी इच्छा इसे समझने और इसे लागू करने की योग्यता के साथ-साथ देता है।

''ज्ञान'' के लिए यूनानी संज्ञा शब्द (sophia) का इस्तेमाल पौलुस और नये नियम के अन्य लेखकों द्वारा बार-बार किया गया। ''समझ'' के लिए यूनानी संज्ञा शब्द (phronesis) नये नियम में केवल एक और बार मिलता है (लूका 1:17 में जिस में धर्मी व्यक्ति के ''व्यवहार'' की बात की गई है)। पलेटो, अरस्तु, फिलो और सिसेरी बाइबल से बाहर के विशिष्ट स्त्रोत हैं जिन्होंने इन दो शब्दों में अन्तर किया, जिस में ''ज्ञान'' मुख्य विचार है, अधिक सामान्य अर्थ में, और ''समझ'' ज्ञान के शेष परिणाम या प्रासंगिकता को दिखाते हुए, गौण विचार है। नये नियम के उपयोगों में भी ऐसा ही लगता है। ज्ञान परमेश्वर की बातों की बौद्धिक समझ है, और ''समझ'' हमारे प्रतिदिन के जीवनों के लिए इन बातों की अधिक प्राथमिकता है। असली धार्मिक ज्ञान और समझ परमेश्वर के बहुतायत के अनुग्रह के दानों में मिलते हैं। ''ज्ञान'' और ''समझ'' जिनकी बात पौलुस ने की, ''अपनी इच्छा का भेद'' जिसे परमेश्वर ने बताना चुना है, समझने और लागू करने की परमेश्वर द्वारा दी गई क्षमता को कहा गया है।

आयत 9. भेद इफिसियों में छह बार मिलने वाले musterion का अनुवाद है। इस में उस

पर जिसे दिया गया हो ईश्वरीय सच्चाई के प्रकट किए जाने का बोध है, न कि आधुनिक अर्थ जिस की न तो थाह मिल सकती है और न समझ। जैसा कि यहां इस्तेमाल हुआ है यह सुसमाचार के लिए है (देखें 6:19) जो कि मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा लोगों को आग से बचाने के लिए परमेश्वर की मंशा है। 1 कुरिन्थियों 2:7-13 में पौलुस ने परमेश्वर के भेद प्रकट किए जाने के बारे में कुछ विस्तार से बताया। उस ने कहा कि उस ने परमेश्वर के ज्ञान या योजना को भेद की रीति में बताया, जिसे समय से पूर्व गुप्त रखा गया था, परन्तु मनुष्य की महिमा के लिए परमेश्वर द्वारा ठहराया गया था (आयत 7)। परमेश्वर की योजना का किसी मनुष्य को कुछ पता नहीं था। किसी ने विचार भी नहीं किया या कल्पना भी नहीं की थी जब तक परमेश्वर ने इसे प्रकट नहीं किया (आयतें 8-10)। परमेश्वर ने अपने ही उपयुक्त समय पर, उस ने इस योजना पर उन पर जिन्हें उस ने इसे ग्रहण करने के लिए चुना था ''आत्मा के द्वारा'' प्रकट किया (आयत 10)। पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि प्रकाशन को प्राप्त करने के लिए परमेश्वर द्वारा चुने हुए लोगों में से वह एक था और यह कि ''जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की बातों में नहीं, परन्तु आत्मिक बातों की सिखाई हुई बातों में ... सुनाते है'' अपने लिए प्रेरणा का दावा किया (आयत 13)।

युगों तक परमेश्वर की योजना एक भेद था। यानी जब तक उस ने इसे प्रकाशन के द्वारा बताया नहीं तब तक यह छुपा हुआ या गुप्त था। जो कुछ अब प्रकट किया गया है उस में उद्धार की पूरी ईश्वरीय योजना (देखें रोमियों 16:25; 1 कुरिन्थियों 2:7; इफिसियों 6:19; कुलुस्सियों 1:26; 1 तीमुथियुस 3:9, 16) के साथ कुछ विशेष बातें हैं। उदाहरण के लिए परमेश्वर ने इस तथ्य को प्रकट किया है कि यहूदियों के साथ-साथ अन्यजाति लोग भी उद्धार के लिए पात्र हैं (रोमियों 11:25; इफिसियों 3:3, 6)। उस ने हमें मसीह के द्वितीय आगमन के समय मृतकों के पुनरूत्थान और जीवितों के बदल जाने की बात बताई (1 कुरिन्थियों 15:51, 52)। इस के अलावा उस ने मसीह और कलीसिया के बीच का सम्बन्ध भी समझाया (इफिसियों 5:32)। पौलुस ने अपनी (परमेश्वर की) इच्छा का भेद बताया। ''इच्छा'' शब्द thelema से लिया गया है (''भावनाओं पर आधारित इच्छा'') और यह दिखाता है कि परमेश्वर की इच्छा उस के प्रेम भरे दिल से दिखती है।

आयत 9. के अनुसार यूनानी उपसर्ग kata का अनुवाद है जिसका इस्तेमाल इफिसियों के इस भाग में पांच बार हुआ है (1:5, 7, 9, 11 [दो बार]) और इसका अर्थ ''किसी बात से नीचे'' हो सकता है। पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि परमेश्वर की इच्छा का यह बताया जाना उस के अभिप्राय (मनकवापं से) से था। जो कुछ परमेश्वर ने सुसमाचार में बताया है वह पवित्र लोगों के लिए बेहतर से बेहतर करने की उस की भली मंशा से निकाला था (देखें 1:5)। ऐसी भली मंशा ही परमेश्वर ने अपने ही इरादे से जो उस के प्रेमपूर्वक मन से निकली थी ठान रखी थी (चतवजपजीमउप, ''अपने सामने रखना ''यानी'' ठानना।)। अपने आप में मसीह के लिए कहा गया प्रतीत होता है और मसीह में मिलने वाली आशिषों के लिए इस भाग में काफी कुछ कहा गया है। परन्तु इस आयत में हम मद नजवप का अनुवाद '' अपने आप में'' करके बेहतर करेंगे (छज्ञश्रट)। क्योंकि विचार परमेश्वर की इच्छा पर हो रहा है और अगली आयत तक मसीह का विशेष रूप से उल्लेख नहीं है (देखें 2 तीमुथियुस 1:9)।

आयत 10. ऐसा eis का अच्छा अनुवाद है क्योंकि पौलुस उस डिजाइन के साथ उस दिशा की घोषणा करने को था, जो परमेश्वर की मंशा ने ली थी। प्रबन्ध oikonomia, oikos (''घर'') और noms (''व्यवस्था'') से बना एक मिश्रित शब्द है, जिसका अर्थ है ''घर का

प्रबन्ध, या घरेलु मामले, प्रबन्धन, निगरानी, किसी दूसरे की सम्पत्ति का प्रबन्ध, प्रबन्धक, निगरान, भण्डारी का कार्यालय।'' लिंकोन का अवलोकन है कि oikonmia का अर्थ प्रबन्ध करने का कार्य अर्थात जिसका प्रबन्ध किया जाता है या प्रबन्धक की भूमिका हो सकता है; परन्तु यूनानी संसार में इसका ''इस्तेमाल निरन्तर रूप में परमेश्वर के संसार की व्यवस्था और प्रबन्ध करने के लिए किया जाता'' था।

यहां पर इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ही प्रबन्धक है यानी प्रबन्ध करने वाला वही है और जिसका प्रबन्ध किया जाता है वह उस की योजना है, जो कि प्रकट हो चुका भेद है। NASB में यूनानी धर्मशास्त्र से मेल खाता शब्द इस्तेमाल करता है चाहे टिप्पणियों में कुछ संस्करणों में ''का'' की है। ''का'' सही समझ देता है क्योंकि यह स्वभाविक रूप में ''समयों के पूरा होने'' की ओर ले जाता है जिसका प्रबन्ध परमेश्वर द्वारा किया जा रहा है। मसीह अब प्रकट किए जा चुके भेद में पूरी तरह शामिल हैं, इस बात में कि वह परमेश्वर की योजना का केन्द्र और इसे लागू करने वाला दोनों हैं। कुलुस्सियों 1:27 में पौलुस ने इस भेद को ''मसीह तुम में'' के रूप में प्रकट किया है।

समयों के पूरा होने का अनुवाद pleroma (''पूरा होना'') और kairos (''समय की अवधि'') से किया गया है। इस वाक्यांश का अर्थ परमेश्वर के भेद के प्रकाशन अर्थात् मसीही युग में पाए जाने वाले समय है। गलतियों 4:4 में पौलुस ने कहा, ''अब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा।'' पौलुस ने समय के उस बिन्दु की ओर संकेत करते हुए जब कि कुछ होता है, ''समय'' के लिए chronos का इस्तेमाल किया। इस आयत में ''पूरा होने'' का अर्थ इतिहास का एक विशेष समय है, जिस में एक लम्बी अवधि पूरी हुई है।

''समय का पूरा होना'' उस समय को कहा गया है जब मसीहा प्रकट हुआ था, जिसे परमेश्वर द्वारा ठहराया गया था, जिसका पूर्वजों को वचन दिया गया था, भविष्यवक्ताओं द्वारा उस की भविष्यवाणी की गई थी, यहूदियों द्वारा उस की प्रतीक्षा की गई और सब विश्वासी लोगों द्वारा दिल से उस की राह देखी गई।

''समयों'' इस बात पर जोर देने के लिए कि संसार के सभी काल अर्थात पुरखाओं के समयों और मूसा की व्यवस्था और इस्त्राएल के समयों के सभी काल मसीही युग की ओर संकेत करते हैं। इस युग में परमेश्वर ने अपनी संतान के लिए विशेष दान और आशिषें दी हैं।

परन्तु यह दान और सौभाग्य पूर्ण रूप में तब तक नहीं दिए जा सकते थे जब तक इन्हें पाने वाले अवयस्क [गलातियों 4:1-3] और उन के लिए तैयार नहीं थे। प्रतीक्षा का एक काल निकलना आवश्यक था और प्रशिक्षण की प्रक्रिया के पूरा होने और प्रौढ़ता का समय आने पर ही पूर्ण रूप में ये दान दिए जा सकते थे। परमेश्वर के पास अपने अनुग्रह के गुप्त उद्देश्य के रूप में यह समय अनुकूल था। जब वह समय आया तो उस ने मसीह के देहधारी होने में अपने रहस्य को प्रकट कर दिया और वस्तुओं की एक नई स्थिति बताई जिसे मनुष्यों के साथ उस के पूर्वव्यवहारों और अपने अनुग्रह की पूर्ण मंशा के प्रकाशन में इतनी देर लगाने का कारण बताया गया।

इसे ''पूरा होने'' से मसीह के देहधारी होने से लेकर उस के द्वितीय आगमन तक उसका पूरा युग अस्तित्व में आया। इस में वह सब आ जाता है जो परमेश्वर ने इस वर्तमान युग में पूरा करने के लिए ठहराया है।

आयत 10. यह आयत परमेश्वर के प्रबन्ध के स्वभाव की सब बातें स्पष्ट कर देती है। पौलुस के द्वारा मसीह में अपनी मंशा की घोषणा करते हुए परमेश्वर ने अपने मन की बात खोल

दी। कुछ संस्करणों में इटैलिक यानी तिरछा किया गया मिलता है, जो इस बात का संकेत है कि इन शब्दों को और स्पष्ट अर्थ देने के लिए अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया। अनुवादकों ने ऐसा करके बहुत अच्छा किया क्योंकि ''समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध सब कुछ मसीह में एकत्र करना ही है।''

एकत्र करे बहुत कम इस्तेमाल हुए यूनानी क्रिया शब्द anakephalaioo का अनुवाद है जो केवल यहां और रोमियों 13:9 में मिलता है। इस की परिभाषा ''जोड़ना,'' ''सारांश देना,'' ''मसीह में सब कुछ इकट्ठा करना'' है। रोमियों में पौलुस ने मानवीय सम्बन्धों से जुड़ी सभी आज्ञाओं का ''सारांश'' बना दिया। उस ने कहा कि ''सब का सारांश इस बात में पाया जाता है, 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।' ''सब आज्ञाओं का सारांश प्रेम है; और इसी भाषा में, परमेश्वर की योजना का सारांश मसीह है।

यूनानी में मध्य सुर, जैसा कि यहां है, का अर्थ है ''फिर से इकट्ठे होना,'' जो उस के मिलने का संकेत है, जो किसी समय एक था परन्तु फिर अलग हो गया। किसी समय एक, क्या था, जो अलग हेा गया और अन्त में इस मसीही युग में परमेश्वर के भेद के प्रकाशन के अनुसार मिल गया? यहां पर संदर्भ उस बात पर जोर देता है जो परमेश्वर ने मसीह में पवित्र लोगों और विश्वासियों के लिए पूरी की है। जो मसीह में है उन्हें चुना जाना, गोद लिया जाना, छुड़ाया जाना और क्षमा किया जाना आवश्यक था और जो मसीह में हैं, उन्हें परमेश्वर के भेद का प्रकाशन मिला है, इस कारण इसका अर्थ यह है कि मसीही लोग किसी समय पाप के कारण परमेश्वर से अलग थे (देखें यशायाह 59:1, 2) परन्तु अब मिल गए हैं। कुलुस्सियों 1:20-22 में पौलुस ने यह स्पष्ट किया, जब उस ने कहा कि परमेश्वर ने मसीह के क्रूस के लहू के द्वारा सब बातों को अपने साथ मिलाया चाहे वे स्वर्ग की हों या पृथ्वी पर की। उस ने आगे कहा कि कुलुस्से के लोग पहले बुरे कामों में लगे होने के कारण परमेश्वर से अलग थे, परन्तु अब उस के साथ मिल गए थे। क्रूस पर मसीह के लहू के द्वारा परमेश्वर ने किस बात को पूरा किया? उस ने अपने साथ मिलाने के लिए पापी लोगों के लिए रास्ता खोल दिया। इसलिए सब कुछ जो स्वर्ग में है और जो कुछ पृथ्वी पर है। वैश्विक मेल अर्थात छुटकारे के मसीह के काम की पूर्णता को व्यक्त करने का प्रतीकात्मक ढंग है। आखिर मसीह ने अपना लहू स्वर्गदूतों या सृजित संसार के लिए नहीं, बल्कि पापी मनुष्य जाति के लिए बहाया।

यूनानी धर्मशास्त्र में आयत 10 में ''मसीह'' से पहले एक उपपद मिलता है। सैलमण्ड ने अवलोकन किया है कि उपपद का मिलाया जाना इसे एक अधिकार बना देता है जैसा कि आयत 12 में है। हेनरी एल्फर्ड ने कहा कि जब ''मसीह'' शब्द के साथ उपपद जोड़ा जाता है तो कोई विशेष बात की जा रही होती है। इस आयत में कही जा रही विशेष बात यह है कि मसीही युग में परमेश्वर का सारा उद्देश्य पापी व्यक्ति को ''मसीह में'' अपने साथ मिलाना है, ईश्वरीय उद्देश्य का चरम स्वर्ग और पृथ्वी के ''अलग-अलग तत्वों को इकट्ठे करना। अर्थात परमेश्वर से मनुष्य को मिलाना है।

1:8-10 में पौलुस ने घोषणा की कि वह भेद जिसे परमेश्वर ने अब प्रकट किया है, वह मसीही युग ही है। इस युग के दौरान मसीह पापी लोगों को परमेश्वर से मिलाने के काम में लगा हुआ है; वह पृथ्वी को स्वर्ग से तब मिला रहा होता है, जब लोग मसीह में पवित्र लोग और विश्वासी बनते हैं। यही तो परमेश्वर की मंशा है, जो बीते युगों में एक भेद था, परन्तु अब खुल चुका है।